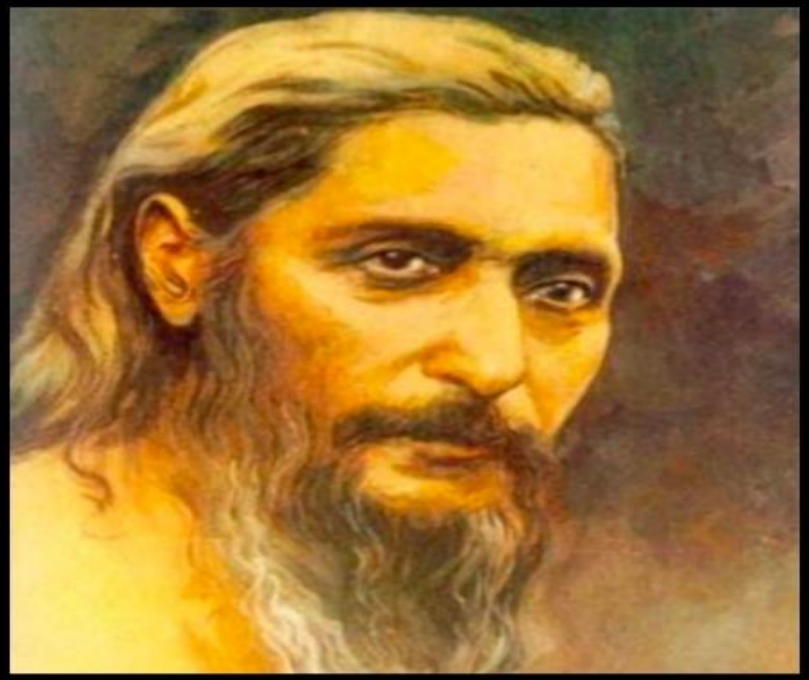

राम की शक्ति
पूजा की सरल
व्याख्या

निराला

राम की शक्ति पूजा

र व हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लखा अमर
रहे गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण शर- वधृत- क्षप्रकर, वेग-प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नील नभगर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल - परिवर्तित - व्यूह - भेद कौशल समूह
राक्षस - वरुद्ध प्रत्यूह,-क्रुद्ध - क प वषम हूह,
वच्छुरित वह्नि - राजीवनयेन - हतलक्ष्य - बाण,
लोंहितलोचन - रावण मदमोचन - महीयान,
राघव-लाघव - रावण - वारण - गत - युग्म - प्रहर,
उदधत - लंकापति मर्दित - क प - दल-बल - वस्तर,
अनिमेष - राम- वश्वजिददिव्य - शर - भंग - भाव,
वदधांग-बदध - कोदण्ड - मुष्टि - खर - रु धर - स्राव,
रावण - प्रहार - दुर्वार - वकल वानर - दल - बल,
मुर्छित - सुग्रीवांगद - भीषण - गवाक्ष - गय - नल,
वारित - सौ मित्र - भल्लपति - अग णत - मल्ल - रोध,
गर्ज्जित - प्रलयाब्धि - क्षुब्ध हनुमत् - केवल प्रबोध,
उदगीरित - वह्नि - भीम - पर्वत - क प चतुःप्रहर,
जानकी - भीरू - उर - आशा भर - रावण सम्वर।

राम की शक्ति पूजा

लौटे युग - दल - राक्षस - पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार - बार आकाश वकल।
वानर वाहिनी खन्न, लख निज - पति - चरण चह्न
चल रही श वर की ओर स्थ वरदल ज्यों व भन्न।

प्रश मत हैं वातावरण, न मत - मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चन्तापल पीछे वानर वीर - सकल
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा - मुकुट हो वपर्यस्त प्रतिलेट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, वपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकतीं दूर ताराएं ज्यों हों कहीं पार।

राम की शक्ति पूजा

आये सब श वर,सानु पर पर्वत के, मन्थर
सुग्रीव, वभीषण, जाम्बवान आदिक वानर
सेनापति दल - वशेष के, अंगद, हनुमान
नल नील गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान
करने के लए, फेर वानर दल आश्रय स्थल।

बैठे रघु-कुल-म ण श्वेत शला पर, निर्मल जल
ले आये कर - पद क्षालनार्थ पटु हनुमान
अन्य वीर सर के गये तीर सन्ध्या - वधान
वन्दना ईश की करने को, लौटे सत्वर,
सब घेर राम को बैठे आज्ञा को तत्पर,
पीछे लक्ष्मण, सामने वभीषण, भल्लधीर,
सुग्रीव, प्रान्त पर पाद-पदम के महावीर,
यूथपति अन्य जो, यथास्थान हो निर्निमेष
देखते राम का जित-सरोज-मुख-श्याम-देश।

राम की शक्ति पूजा

है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बु ध वशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फर - फर संशय
रह - रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा वकल वह बार - बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

राम की शक्ति पूजा

ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे वद्युत
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छ व अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
वदेह का, -प्रथम स्नेह का लतान्तराल मलन
नयनों का-नयनों से गोपन- प्रय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए कसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरू मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,-ज्ञात छ व प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता ध्यान-लीन राम के अधर,
फर वश्व- वजय-भावना हृदय में आयी भर,
वे आये याद दिव्य शर अग णत मन्त्रपूत,-
फड़का पर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत,
देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का, सुबाहु, बिराध, शरस्त्रय, दूषण, खर

को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझ कर हुए क्षीण,
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन;
लख शंकाकुल हो गये अतुल बल शेष शयन,
खंच गये दृगों में सीता के राममय नयन;
फर सुना हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,
भा वत नयनों से सजल गरे दो मुक्तादल।